

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , सैमुअल्स, व्याख्यान 4

© 2011, रॉबर्ट वैनॉय और टेड हिल्लेब्रांट

“अब हम 1 और 2 शमूएल में राजत्व और वाचा के विषय पर अपने विचार में अंतिम बिंदु पर आते हैं। अर्थात्, दाऊद द्वारा अभ्यास किया गया राजत्व एक अपूर्ण, लेकिन वाचा के राजा के आदर्श का सही प्रतिनिधित्व था। और जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, हम 2 शमूएल की पुस्तक में दाऊद के शासनकाल का वर्णन पाते हैं। प्रथम शमूएल के अंत में शाऊल की मृत्यु के बाद, दाऊद को शुरू में यहूदा के गोत्र द्वारा राजा के रूप में स्वीकार किया गया था, जिस पर उसने दक्षिणी शहर हेब्रोन में कुछ समय के लिए शासन किया (2 शमूएल 2:1-7)। फिर, बाद में, शाऊल के बेटे, ईशबोशेत द्वारा उत्तरी जनजातियों के बीच अपने पिता के वंश को कायम रखने में विफल होने के बाद, उसे इस्राएल के शेष जनजातियों द्वारा राजा के रूप में स्वीकार किया गया। यह 2 शमूएल 5 में है कि दाऊद अंततः पूरे राष्ट्र पर अपना शासन शुरू करता है। हम 2 शमूएल 5 की आयत 3 में पढ़ते हैं। “जब इस्राएल के सभी बुजुर्ग हेब्रोन में राजा दाऊद के पास आए थे, तो राजा ने हेब्रोन में उनके साथ एक समझौता किया। यहोवा ने दाऊद को इस्राएल का राजा अभिषिक्त किया।”

पूरे इस्राएल पर दाऊद के शासन की शुरुआत का वर्णन करने के बाद वर्णनकर्ता जिस पहली चीज़ का जिक्र करता है, वह है सिय्योन के गढ़ पर उसका कब्ज़ा। उस समय, सिय्योन एक छोटा मगर भारी किलेबंद शहर था जिसमें यबूसी लोग रहते थे। यह उस दक्षिण-पूर्वी रिज पर स्थित था जिसे बाद में यरूशलेम का मंदिर पर्वत बना। राजनीतिक दृष्टिकोण से, सिय्योन सरकार की नई सीट के लिए आदर्श स्थान था। यह केंद्र में स्थित था और न तो यहूदा से संबंधित था, जो दाऊद का गोत्र था, और न ही बिन्यामीन से, जो शाऊल का गोत्र था, क्योंकि यह दोनों के बीच की सीमा पर स्थित था। इसके अलावा, चूँकि यह स्थल तीन तरफ से गहरी घाटियों से घिरा हुआ था और मजबूती से किलेबंद था, इसने इस्राएल को लगभग अभेद्य राष्ट्रीय राजधानी प्रदान की। यह एक दूरगामी महत्व की घटना थी, क्योंकि दाऊद की राजधानी के रूप में, सिय्योन न केवल इस्राएल का धार्मिक

और राजनीतिक केंद्र बनना था, बल्कि, समय के साथ, यह यहूदी और ईसाई धर्म दोनों के इतिहास में और वास्तव में, बाद के विश्व इतिहास में भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने वाला था।

2 शमूएल 5 फिर पाठक को कहानियों की एक श्रृंखला में ले जाता है जो दाऊद के शासनकाल को उसके सभी वैभव में चित्रित करती है, जबकि उसी समय, इसके षड्यंत्रों और जटिलताओं के बारे में भी कुछ बताती है। हम उन कहानियों को 2 शमूएल 5 से लेकर पुस्तक के अंत में अध्याय 24 तक पाते हैं। 2 शमूएल 6 और 7 उन मामलों से निपटते हैं जो 1 और 2 शमूएल की पूरी पुस्तक के दिल में हैं। जैसा कि हमने पिछली चर्चाओं में देखा है, राजत्व और वाचा 1 और 2 शमूएल में दो सबसे महत्वपूर्ण विषय हैं। जैसा कि हमने यह भी देखा है, जब इस्राएल के बुजुर्ग 1 शमूएल 8 में आस-पास के देशों की तरह एक राजा की मांग करते हैं, तो वे वाचा से इनकार करते हैं और, संक्षेप में, प्रभु को अस्वीकार करते हैं, जो उनका राजा था। परन्तु, जब शमूएल को प्रभु द्वारा लोगों को एक राजा देने का निर्देश दिया गया, तो उसने ऐसा वाचा के नवीकरण की पृष्ठभूमि में किया, जिसने न केवल यहोवा के प्रति निष्ठा के नवीकरण के संदर्भ में इस्राएल के राजतंत्र की स्थापना की, बल्कि साथ ही, मानवीय राजत्व को ईशतन्त्र की संरचना में इस तरह से एकीकृत किया, जिससे इस्राएल के दिव्य राजा के रूप में यहोवा की निरन्तर मान्यता बनी रही।

हमने इसे विशेष रूप से 1 शमूएल 11:14 से 12:25 के संबंध में देखा। इस बिंदु से आगे, इस्राएल में मानव राजा को अपने लोगों पर यहोवा के शासन का एक प्रतिनिधि होना था। उसे एक स्वायत्त राजा नहीं होना था, जैसा कि आस-पास के देशों के राजा थे। उसे मूसा के कानून की आवश्यकताओं के साथ-साथ भविष्यद्वक्ताओं के निर्देशों का पालन करने के लिए बाध्य किया गया था। लेकिन शाऊल, इस्राएल का पहला राजा, एक निराशा साबित हुआ। उसने अपने शाही पद पर इस तरह से काम नहीं किया जिससे यहोवा को इस्राएल के सच्चे संप्रभु के रूप में निरंतर मान्यता मिले। उसने बार-बार भविष्यद्वक्ता शमूएल के माध्यम से दिए गए प्रभु के वचन की अवज्ञा की। जब उसकी अवज्ञा के लिए उसका सामना किया गया, तो उसने अपने पाप को स्वीकार करने के बजाय अपने कार्यों को सही ठहराने का प्रयास किया। इसके कारण प्रभु ने शाऊल को अस्वीकार कर दिया और इस्राएल में सिंहासन पर उसके स्थान पर दाऊद का अभिषेक किया।

अब जबकि दाऊद पूरे इस्राएल का शासक बन गया है, हमें 2 शमूएल 6 में दाऊद द्वारा लिए गए एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय के बारे में बताया गया है जिसका राजत्व और वाचा (पुस्तक का मुख्य विषय) के विषय से गहरा संबंध है। यह दाऊद का निर्णय था कि वाचा के सन्दूक को यरूशलेम (सिय्योन) में लाया जाए, जो उसकी नई अधिग्रहीत राजधानी थी। मैंने इन व्याख्यानों की शुरुआत में इसका संक्षेप में उल्लेख किया था। यरूशलेम में सन्दूक लाने में दाऊद की यह मान्यता निहित थी कि यहोवा इस्राएल का ईश्वरीय संप्रभु था। मैं वाचा के सन्दूक के बारे में बस कुछ शब्द कहना चाहता हूँ। जब परमेश्वर ने मूसा को तम्बू बनाने के निर्देश दिए, तो वाचा का सन्दूक सबसे पहले वर्णित किया जाने वाला घटक था। सन्दूक लकड़ी से बना एक आयताकार बक्सा था जो सोने से मढ़ा हुआ था और जिसका माप लगभग चार फीट गुणा ढाई फीट गुणा ढाई फीट था। इसे परम पवित्र स्थान में एक पर्दे के पीछे रखा जाना था, जिसमें महायाजक प्रायश्चित के दिन साल में केवल एक बार प्रवेश करता था। सन्दूक के ऊपर, करूबों के बीच, उसके ढक्कन के दोनों छोर पर, परमेश्वर के अपने लोगों के बीच रहने का केंद्र बिंदु था। निर्गमन 25:22 में मूसा से कहा गया है कि 'मैं वहाँ तुमसे मिलूँगा' (यह यहोवा मूसा से बात कर रहा है); "मैं वहाँ तुमसे मिलूँगा और प्रायश्चित के ढक्कन के ऊपर से, वाचा के सन्दूक के ऊपर मँडराते हुए सोने के करूबों के बीच से तुमसे बात करूँगा। वहाँ से मैं तुम्हें इस्राएल के लोगों के लिए अपनी आज्ञाएँ दूँगा।" 1 शमूएल 4:4 और 2 शमूएल 6:2 में, सन्दूक को उस सिंहासन के रूप में संदर्भित किया गया है जिस पर यहोवा अदृश्य रूप से बैठे हैं। इसी तरह के रूपक का उपयोग करते हुए, 1 इतिहास 28:2 और भजन 132:7 में सन्दूक को यहोवा के सिंहासन की पादपीठ के रूप में संदर्भित किया गया है। मूसा को सन्दूक के अंदर दस आज्ञाओं की एक प्रति रखने का निर्देश दिया गया था। इसलिए, सन्दूक के प्रतीकात्मक कार्यों में से दो सबसे प्रमुख कंटेनर और सिंहासन हैं। क्योंकि सन्दूक एक बक्सा था जिसमें परमेश्वर के कानून की एक प्रति थी, जो अदृश्य रूप से उसके ऊपर विराजमान था, यह यहोवा के अपने लोगों इस्राएल पर दिव्य राजत्व का एक दृश्य प्रतीक था। इसलिए, सन्दूक को सिय्योन में लाकर, दाऊद और इस्राएल के लोग सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर रहे थे कि यहोवा उनका महान राजा था।

दाऊद द्वारा सन्दूक को सिव्योन में लाने के बाद, इस शहर को उस स्थान के रूप में पहचाना जाने लगा जहाँ प्रभु ने अपना नाम निवास करने दिया था, जैसा कि व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 पद 5 और पद 11 में पूर्वानुमानित है। इस बिंदु से आगे, पुराने नियम में कई ग्रंथ सिव्योन की बात करते हैं, न केवल दाऊद के शाही शहर और इस्राएल राष्ट्र की राजधानी के रूप में, बल्कि उस स्थान के रूप में भी जहाँ से इस्राएल के दिव्य राजा, यहोवा ने पूरी पृथ्वी पर शासन किया था। भजन 9:11 - "यरूशलेम में राज्य करने वाले यहोवा की स्तुति गाओ।" भजन 76:2 - "यरूशलेम वह स्थान है जहाँ प्रभु रहता है; सिव्योन पर्वत उसका निवास स्थान है।" भजन 99:2 - "प्रभु यरूशलेम में महाप्रतापी होकर विराजमान है, और सब जातियों से अधिक महान है।" भजन 132:13 - "क्योंकि यहोवा ने यरूशलेम को चुना है; उसने उसे अपना घर होने के रूप में चाहा है।" यशायाह 8:18 – "हम इस्राएल में यहोवा की ओर से चिन्ह और प्रतीक हैं, जो सिव्योन पर्वत पर निवास करता है।" यिर्मयाह 8:19 – "मेरी प्रजा का रोना सुनो; यह पूरे देश में सुना जा सकता है। 'क्या यहोवा ने यरूशलेम को त्याग दिया है?' लोग पूछते हैं, 'क्या हमारा राजा अब वहाँ नहीं है?' बाइबिल की शिक्षा के अनुसार, सिव्योन, यरूशलेम, यहोवा का निवास स्थान, इस्राएल का दिव्य राजा, एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी के निर्माण तक मानव इतिहास का केंद्र बिंदु बना रहेगा, और ऐसे कई ग्रंथ हैं जो मुक्ति के इतिहास को सामने लाने में यरूशलेम की भूमिका के बारे में बात करते हैं।

इसलिए, जबकि 2 शमूएल 6 में, दाऊद ने यरूशलेम में सन्दूक लाकर राष्ट्र पर अपने राजसी शासन की पुष्टि करके प्रभु का सम्मान किया। हम अगले ही अध्याय, 2 शमूएल 7 में पाते हैं कि प्रभु ने दाऊद को एक ऐसे राजवंश का वादा करके सम्मानित किया जो हमेशा कायम रहेगा। 2 शमूएल 7, वास्तव में, 1 और 2 शमूएल की पूरी पुस्तक का उच्च बिंदु है। यहाँ हम पाते हैं कि अब्राहम से यहूदा तक फैली हुई वादा की गई वंश की रेखा अब संकीर्ण और तेज हो गई है। यहाँ हम सीखते हैं कि उत्पत्ति 3:15 में बताई गई स्त्री का वंश, जो अंततः सर्प के सिर को कुचल देगा - स्त्री का वंश दाऊद के शाही वंश से आएगा। दाऊद ही वह है जो आने वाले महान मसीहा राजा का पूर्वज होगा। यह वादा, निश्चित रूप से, अंततः मसीह में पूरा होता है। दाऊद से की गई प्रभु की प्रतिज्ञा पर विचार करते हुए, जिसका 2 शमूएल 7 में विस्तार से वर्णन किया गया है, प्रभु भजन 89:3

और उसके बाद के पदों में कहते हैं - और मैं वह सब नहीं, बल्कि उसमें से कुछ पद पढ़ूंगा। 2 शमूएल 7 में प्रभु द्वारा दाऊद से किए गए वादे का एक पुनरावृत्ति है, जहाँ प्रभु कहते हैं, "मैंने अपने चुने हुए के साथ वाचा बाँधी है, मैंने अपने सेवक दाऊद से शपथ ली है, 'मैं तेरे वंश को सदा के लिए स्थापित करूँगा और तेरी गद्दी को पीढ़ी-पीढ़ी तक स्थिर रखूँगा।'... मैंने अपने सेवक दाऊद को पा लिया है; मैंने अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है। मेरा हाथ उसे बनाए रखेगा; निश्चित रूप से मेरी भुजा उसे मजबूत करेगी... मैं उसके प्रति अपना प्रेम सदा बनाए रखूँगा, उसके साथ मेरी वाचा कभी नहीं टूटेगी। मैं उसके वंश को हमेशा के लिए स्थापित करूँगा, जब तक स्वर्ग बना रहेगा तब तक उसका सिंहासन बना रहूँगा। यदि उसके पुत्र मेरे कानून को त्याग दें और मेरी विधियों का पालन न करें, यदि वे मेरे नियमों का उल्लंघन करें और मेरी आज्ञाओं को मानने में विफल रहें, तो मैं उनके पाप को छड़ी से और उनके अधर्म को कोड़ों से दण्ड दूँगा; लेकिन मैं उससे अपना प्रेम नहीं हटाऊँगा, न ही मैं अपनी वफादारी को कभी धोखा दूँगा। मैं अपनी वाचा को नहीं तोड़ूँगा या अपने होठों से जो कहा है उसे नहीं बदलूँगा। एक बार के लिए, मैंने अपनी पवित्रता की शपथ ली है - और मैं करूँगा दाऊद से झूठ न बोलो - कि उसका वंश सदा बना रहेगा और उसका सिंहासन सूर्य के समान मेरे साम्हने सदा बना रहेगा; वह आकाश में विश्वासयोग्य साक्षी चन्द्रमा के समान सदा स्थिर रहेगा। ” नए नियम में, हम पाते हैं कि यीशु दाऊद के पुत्र, अब्राहम के पुत्र के रूप में पैदा हुआ (मत्ती 1:1)। स्वर्गदूत गेब्रियल ने मरियम से कहा कि उसका पुत्र अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा (लूका 1:32 और 33)। मत्ती 20 पद 30 में यीशु को सड़क के किनारे बैठे दो अंधे पुरुषों ने दाऊद के पुत्र के रूप में संबोधित किया है। उन्होंने कहा, “हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।” यीशु अपने बारे में कहते हैं, “मैं दाऊद का मूल और वंश और भोर का चमकता हुआ तारा हूँ।”

हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि दाऊद के बाइबिल चित्रण में, यह उसकी उपलब्धियों या एक नेता के रूप में उसके गुणों के बारे में नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के उद्देश्य हैं जो उसके द्वारा और उसके माध्यम से पूरे होने थे जो सबसे महत्वपूर्ण हैं। इस कारण से, दाऊद को आदर्श नहीं बनाया गया है। उसे किसी पद पर नहीं रखा गया है। उसकी कमज़ोरियाँ स्पष्ट हैं, उन्हें

छिपाया या छिपाया नहीं गया है। दाऊद की सबसे प्रसिद्ध, लेकिन किसी भी तरह से एकमात्र विफलता नहीं थी, बतशेबा के साथ व्यभिचार में उसकी संलिप्तता और उसके पति, उरीया की हत्या। 2 शमूएल 11:2-12:25 में वर्णित इस घटना में, दाऊद ने अचानक एक राजा के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया, जैसे अन्य सभी राष्ट्रों ने किया है, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने लोगों से लिया। 1 शमूएल 8 में इसका वर्णन याद रखें। अचानक, दाऊद ने खुद को कानून से ऊपर देखा और खुद के लिए एक कानून बन गया, बजाय एक राजा के रूप में व्यवहार करने के जो प्रभु के कानून और भविष्यवक्ताओं के शब्दों के अधीन था। अचानक, दाऊद ने ऐसे तरीके अपनाए जो एक सच्चे वाचाबद्ध राजा के व्यवहार से मेल नहीं खाते। अध्याय 11 का अंतिम वाक्यांश, जो कहता है, "दाऊद ने जो किया उससे प्रभु अप्रसन्न था," सीधे अध्याय 12 की आरंभिक पंक्ति की ओर ले जाता है, जो कहता है, "इसलिए प्रभु ने दाऊद को यह कहानी बताने के लिए नबी नातान को भेजा।" इन दो खंडों का संयोजन, "दाऊद ने जो किया उससे प्रभु अप्रसन्न था," और "दाऊद को यह कहानी बताने के लिए प्रभु ने नबी नातान को भेजा," वह धुरी है जिस पर कथा अध्याय 11 में पाए जाने वाले दाऊद के पापों के वर्णन से आगे बढ़ती है और प्रभु द्वारा दाऊद को जवाबदेह ठहराने के वर्णन तक पहुँचती है, जो हमें अध्याय 12 में मिलता है। नातान वही नबी था जिसने दाऊद से कहा था कि उसका वंश हमेशा के लिए कायम रहेगा (अध्याय 7 में)। अब, हालाँकि, 2 शमूएल 12 में, वह दाऊद को एक बिल्कुल अलग संदेश देता है। नातान का यह कर्तव्य था कि वह दाऊद को उसके पापों की गंभीरता के बारे में बताए और फिर उसे बताए कि उसके पाप से उसके परिवार और दरबार पर क्या गंभीर परिणाम होंगे। नातान की फटकार के केंद्र में, वह दाऊद के प्रति प्रभु के अनुग्रहपूर्ण कार्यों के बीच एक अंतर बनाता है, जिसका वर्णन पद 7 और 8 में किया गया है - "मैंने तेरा अभिषेक किया, मैंने तुझे बचाया, मैंने तुझे दिया, मैंने तुझे और भी बहुत कुछ दिया होता" - उसके अनुग्रहपूर्ण कार्यों और 12:9 में दाऊद द्वारा अपनी वाचा संबंधी जिम्मेदारियों को पूरा करने में विफलता के बीच एक अंतर - "तूने यहोवा के वचन को तुच्छ जाना है।" दाऊद के पापों को हत्या और दूसरे व्यक्ति की पत्नी को चुराने के रूप में नामित किया गया है (पद 9बी)। इन पापों के कारण, दाऊद को तीन गुना दंड भुगतना पड़ेगा। सबसे पहले, तलवार

उसके परिवार को पीड़ित करेगी जैसा कि उसने उरिय्याह को किया था (पद 9 और 10)। दूसरा, विद्रोह उसके अपने घराने के भीतर से उठेगा (पद 11ए)। और तीसरा, उसकी पत्नियों को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने निजी तौर पर उरिय्याह को अपमानित किया था (वचन 11ब और 12)।

2 शमूएल और 1 राजा के शुरुआती अध्यायों में आने वाली कहानियों में इन दंडों की पूर्ति का वर्णन शामिल है। नातान के अभियोग को सुनने के बाद, दाऊद ने तुरंत पश्चाताप और पश्चाताप के शब्दों के साथ जवाब दिया। उसने पद 13 में कहा, "मैंने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है।" यदि आप हिब्रू पाठ में इसे देखें, तो जैसे नातान ने हिब्रू पाठ में केवल दो शब्द कहे थे जब उसने दाऊद से कहा था, "तुम ही वह व्यक्ति हो," वैसे ही दाऊद ने हिब्रू पाठ में केवल दो शब्द कहे जब उसने अपना अपराध स्वीकार किया। ये दो बहुत ही संक्षिप्त कथन संपूर्ण कथा इकाई की गतिशीलता के हृदय को मूर्त रूप देते हैं। जैसा कि एरियल साइमन ने उल्लेख किया है, "नाथन का 'तू ही वह व्यक्ति है' और दाऊद का जवाब 'मैंने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है' उनकी मौलिक संक्षिप्तता से उनके बल को कम करता है।" दाऊद का कबूलनामा पूर्ण, बिना शर्त और स्पष्ट था। 'मैंने पाप किया है।' इसके विपरीत, हम शाऊल को याद करते हैं, जिसने शमूएल द्वारा सामना किए जाने पर जिम्मेदारी को बदलने और अपने पापपूर्ण व्यवहार को सही ठहराने का प्रयास किया। दाऊद ने अपने पापपूर्ण कृत्यों की पूरी जिम्मेदारी ली। भजन 32:3 और 4 से ऐसा प्रतीत होता है कि उसके अस्वीकृत पापों ने उसकी आत्मा पर भारी बोझ डाला था। वह वहाँ कहता है, "जब मैं चुप रहता था, तो दिन भर कराहते-कराहते मेरी हड्डियाँ गल जाती थीं। क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी रहता था। मेरी शक्ति गर्मी की तपिश की तरह कम हो गई थी।" इसलिए, वह पश्चाताप करने के लिए तैयार था। उसका यह स्वीकार करना कि उसका पाप प्रभु के विरुद्ध था, "मैंने केवल तेरे विरुद्ध पाप किया है। मैंने वही किया है जो तेरी दृष्टि में बुरा है" (भजन 51:4) का उद्देश्य उरीया और बतशेबा और विस्तार से, पूरे इस्राएल राष्ट्र के विरुद्ध किसी भी अपराध को नकारना नहीं है, बल्कि यह एक मान्यता है कि सभी पाप, सबसे पहले, परमेश्वर के नियम का उल्लंघन है। इसके मूल में, दाऊद का पाप बिल्कुल वैसा ही था जैसा नातान ने इसका वर्णन किया था। यह 'प्रभु के वचन का

तिरस्कार' था (श्लोक 9)। इस मामले में, प्रभु का वचन मूसा का कानून था, जिसे इस्राएल के राजा को अपने जीवन के सभी दिनों में पढ़ने की आज्ञा दी गई थी, ताकि वह राजा के कानून में इन निर्देशों और आदेशों (व्यवस्थाविवरण 17:19) के सभी शब्दों का पालन करके प्रभु का भय मानना सीख सके। जैसा कि हमने देखा है, सच्चा वाचा का राजा कानून से ऊपर नहीं था, न ही वह खुद के लिए कानून था। उसे हर दूसरे इस्राएली की तरह प्रभु के कानून का सम्मान करने के लिए बाध्य किया गया था।

भजन 51 में पाए जाने वाले दाऊद के कबूलनामे के विस्तृत विवरण में, दाऊद ने प्रभु से उस पर दया करने और उसके पापों के दाग को मिटाने, उसे उसके अपराध से शुद्ध करने और उसके पाप से शुद्ध करने के लिए कहा (भजन 51:1-2)। फिर उसने प्रभु से विनती की कि उसे अपनी उपस्थिति से न भगाएँ, न ही उसकी पवित्र आत्मा को उससे दूर करें (भजन 51:11)। इस अंतिम अनुरोध के वाक्यांश से ऐसा लगता है कि दाऊद को इस बात की गहरी जानकारी थी कि ये वही चीजें थीं जो प्रभु ने शाऊल के साथ की थीं। 1 शमूएल 16:1 और 14 में, प्रभु की आत्मा शाऊल से दूर हो गई थी और प्रभु की ओर से एक दुष्ट आत्मा ने उसे पीड़ा दी थी। इसलिए, उसकी याचिका परमेश्वर की प्रतिज्ञा के लिए एक प्रत्यक्ष अपील थी कि, शाऊल के घराने के विपरीत, उसका अपना राजवंश त्यागा नहीं जाएगा, बल्कि 2 शमूएल 7 के वादे के अनुसार हमेशा कायम रहेगा। परमेश्वर द्वारा दाऊद के अनुरोध को स्वीकार करने पर, नातान का उत्तर, "हाँ, परन्तु परमेश्वर ने तुझे क्षमा किया है और तू इस पाप के लिये न मरेगा," इसलिए भी दाऊद के प्रति परमेश्वर की इस अनुग्रहपूर्ण वाचागत प्रतिज्ञा में निहित माना जाना चाहिए, न कि दाऊद की पश्चातापी आत्मा में, जो कि महत्वपूर्ण थी।

इस कहानी में कुछ ऐसा है जो परेशान करने वाला भी है और कुछ आश्चर्य करने वाला भी। व्यक्तिगत स्तर पर, यह पवित्रशास्त्र की सबसे ज्वलंत याद दिलाता है कि सभी मनुष्य, चाहे उनके आस-पास के लोगों की नज़र में उनका दर्जा कितना भी ऊंचा क्यों न हो, चाहे उन्हें प्रभु से कोई विशेष बुलावा क्यों न मिला हो - सभी मनुष्य अभी भी पतित प्राणी हैं और सबसे अकल्पनीय अधर्म करने में सक्षम हैं।

यही कारण है कि बाइबल हमें मनुष्यों के बजाय प्रभु पर भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित करती है। भजन 118:8 - "मनुष्य पर भरोसा करने से प्रभु की शरण लेना उत्तम है।" भजन 146:3 - "अपना भरोसा प्रधानों पर न रखें, न ही ऐसे मनुष्यों पर जो उद्धार नहीं कर सकते।" मनुष्य हमेशा निराश करेंगे, लेकिन प्रभु कभी भी अपने लोगों को निराश नहीं करेंगे। बाइबल के किसी भी नायक को पाप रहित संत के रूप में चित्रित नहीं किया गया है, जिसमें पुराने नियम की अवधि में इज़राइल के सबसे ईश्वरीय शासक भी शामिल हैं।

हालाँकि, मानवीय पाप के विपरीत, यह कथा एक ऐसे ईश्वर को भी चित्रित करती है जो न केवल दाऊद के जीवन में उसके पाप का सामना करने के लिए कृपापूर्वक हस्तक्षेप करता है, बल्कि जिसने कृपापूर्वक उसका जीवन भी बख्शा दिया, और फिर उसे एक और पुत्र दिया जो वादे की रेखा को आगे ले जाएगा। इसलिए, मानवीय पाप की परेशान करने वाली वास्तविकता के बावजूद जो इस कथा में पूरी तरह से प्रदर्शित होती है, यह एक ऐसी कथा है जो अनुग्रह के आश्वासन से भी भरी हुई है। जिस तरह अदन की वाटिका में प्रभु ने आदम और हव्वा का पीछा किया जब उन्होंने परिवीक्षा आदेश का उल्लंघन किया और उनके पाप का सामना किया, उसी तरह, इस अवसर पर, प्रभु ने दाऊद को यह सोचने की अनुमति नहीं दी कि उसके बुरे कार्य ईश्वरीय जांच से छिपे हुए थे। जिस तरह अदन की वाटिका में परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा का पीछा करना उनके पूर्व पश्चाताप पर आधारित नहीं था, उसी तरह दाऊद के मामले में भी प्रभु ने पहल की। उसने शमूएल को उसके सामने पेश होने और उसे पश्चाताप के लिए प्रेरित करने के लिए भेजा, यद्यपि परमेश्वर द्वारा दाऊद को क्षमा करने से वह अपने पाप के परिणामों से मुक्त नहीं हुआ।

डॉ. डेविस ने कहा है, "यहोवा पाप के अपराध को क्षमा करता है, लेकिन पाप के परिणामों को भुगतता है। वह पाप की गंदगी को साफ करता है, लेकिन उसका अनुशासन जारी रख सकता है।" और मुझे लगता है कि डेविड के मामले में भी यही हुआ। परमेश्वर ने अपने घर को सुरक्षित रखने के अपने वादे के प्रति खुद को वफादार दिखाया, और जैसा कि बाद में डेविड ने घोषित किया, प्रभु उसका "छिपने का स्थान" (भजन 32:7) और वह व्यक्ति बना रहा जिसका अटूट प्रेम उसे घेरे रहा, चाहे उसके जीवन के अनुभव कितने भी कठिन क्यों न हों।

2 शमूएल के अंत में, अध्याय 22 में, हमें दाऊद का एक गीत मिलता है, और मुझे लगता है कि इस गीत का शीर्षक उचित रूप से "ईश्वर के राज्य की प्रशंसा में दाऊद का गीत" हो सकता है। 51 छंदों वाला यह उल्लेखनीय गीत 1 और 2 शमूएल के कुछ केंद्रीय विषयों को धार्मिक परिप्रेक्ष्य में रखता है। 2 शमूएल 22 में पाई जाने वाली अन्य बातों के अलावा, इस्राएल के अभिषिक्त राजा के रूप में दाऊद द्वारा की गई एक मजबूत पुष्टि है कि वह यहोवा को अपना और इस्राएल का, परम प्रभु के रूप में पहचानता रहा, जब दाऊद ने श्लोक 29 में कहा कि "यहोवा उसका अन्धकार दूर करने वाला दीपक है," तो पाठक को याद दिलाया जाता है कि पिछले अध्याय, अध्याय 21 में, दाऊद को स्वयं उसके योद्धाओं ने इस्राएल का दीपक कहा था। यह 2 शमूएल 21:17 में है। इन दो कथनों की तुलना से पता चलता है कि दाऊद समझ गया था कि उसका जीवन जो भी प्रकाश प्रक्षेपित कर सकता है वह केवल एक परावर्तित प्रकाश है। उसके पास खुद को देने के लिए कोई प्रकाश नहीं था। वह इस्राएल का प्रकाश केवल इस हद तक था कि उसका अपना जीवन और शासन यहोवा के प्रकाश की कुछ झलक दिखाता था। हालाँकि गीत में यहोवा को "राजा" शब्द से नहीं संबोधित किया गया है, लेकिन विशेष रूप से, सार्वभौमिक ईश्वरीय संप्रभुता और दाऊद द्वारा इसकी पूरे दिल से पुष्टि और इसके लिए परमेश्वर की स्तुति ही प्रमुख विषय है।

1 और 2 शमूएल की पुस्तकों के अध्ययन में एक प्रश्न जिसने बहुत ध्यान आकर्षित किया है, वह यह है कि क्यों प्रभु ने शाऊल को भविष्यद्वक्ता शमूएल के वचन की अवज्ञा करने के कारण सिंहासन से हटा दिया (जैसा कि हम 1 में देख चुके हैं) शमूएल 13 और 15), जब दाऊद, जिसने उरीया और बतशेबा के मामले में भी घोर पाप किया था, को उसके पाप के लिए क्षमा कर दिया गया (2 शमूएल 12), और उसे वचन दिया गया कि उसका वंश हमेशा कायम रहेगा (2 शमूएल 7)। मुझे लगता है कि इस प्रश्न का उत्तर इस गीत में पाया जा सकता है। 2 के श्लोक 21 से 27 में शमूएल 22, दाऊद दो बार कहता है कि प्रभु ने उसे सही काम करने के लिए पुरस्कृत किया (श्लोक 21 और 25)। श्लोक 21 में, हम पढ़ते हैं, "प्रभु ने मेरे साथ मेरे धर्म के अनुसार व्यवहार किया है; मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे प्रतिफल दिया है।" श्लोक 25 में, "प्रभु ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार, मेरी दृष्टि में मेरी शुद्धता के अनुसार प्रतिफल दिया है।" दाऊद यह भी दावा करता है कि

उसने प्रभु के नियमों का पालन किया और कभी भी उसके आदेशों को नहीं छोड़ा (श्लोक 23), और इसलिए वह "परमेश्वर के सामने निर्दोष" था (श्लोक 24)। वह आगे कहता है कि प्रभु उन लोगों के प्रति वफादार और उन लोगों के प्रति शुद्ध है जो शुद्ध हैं, लेकिन दुष्टों के प्रति वह खुद को शत्रुतापूर्ण दिखाता है (श्लोक 26-27)। इसके अलावा, वह कहता है कि प्रभु विनम्र लोगों को बचाता है लेकिन वह अभिमानियों को अपमानित करता है (श्लोक 28)। ये कथन दाऊद द्वारा ईश्वरीय दर्शन की विशद भाषा में वर्णन करने के तुरंत बाद दिए गए हैं (श्लोक 8 से 16), कि कैसे प्रभु ने उसे मृत्यु के वश से बचाया। उसका संकट, जिसे वह मृत्यु के वश के रूप में वर्णित करता है, श्लोक 5-7 में वर्णित है, और फिर आगे 17-20 में। मैं उनमें से कुछ श्लोक पढ़ सकता हूँ। श्लोक 5 में, "मृत्यु की लहरें मेरे चारों ओर घूम रही थीं; विनाश की पीड़ाएँ मुझे अभिभूत कर रही थीं। कब्र की डोरियाँ मेरे चारों ओर लिपटी हुई थीं; मृत्यु की निगाहें मेरा सामना कर रही थीं।" श्लोक 17 में, "वह ऊपर से नीचे आया, मुझे थाम लिया, मुझे गहरे पानी से बाहर निकाला। उसने मुझे मेरे शक्तिशाली शत्रु से, मेरे शत्रुओं से जो मुझसे अधिक शक्तिशाली थे, बचाया" इत्यादि। मृत्यु के वश से इस बचाव का विस्तृत वर्णन है। प्रभु ने उसे क्यों बचाया इसका कारण श्लोक 20 में बताया गया है: ऐसा इसलिए था क्योंकि प्रभु उससे प्रसन्न थे। आप पद 20 में पढ़ते हैं, "उसने मुझे बाहर निकालकर चौड़े स्थान में पहुँचाया; उसने मुझे छुड़ाया क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था।" और प्रभु उससे प्रसन्न इसलिए हुआ क्योंकि उसने सही काम किया। या, "प्रभु ने मेरे साथ मेरी धार्मिकता के अनुसार व्यवहार किया" (पद 21 और 25) जिसका मैंने एक मिनट पहले उल्लेख किया था। "प्रभु ने मेरे साथ मेरी धार्मिकता के अनुसार व्यवहार किया है" (एनआईवी अनुवाद में पद 21)। पद 25 - "प्रभु ने मुझे मेरे धार्मिकता के अनुसार, मेरी दृष्टि में शुद्धता के अनुसार पुरस्कृत किया है।" तो, प्रभु उससे प्रसन्न इसलिए हुआ क्योंकि उसने सही काम किया (पद 21 और 25), वह विश्वासयोग्य था (पद 26), वह शुद्ध था (पद 27), विनम्र था (पद 28) न कि अभिमानी (पद 28) या दुष्ट (एनआईवी कहता है, पद 27 में "कुटिल")।

संदर्भ में, ऐसा लगता है कि दाऊद इन श्रेणियों का उपयोग, अपने और शाऊल के बीच अंतर करने के साधन के रूप में करता है। प्रभु ने नम्र लोगों (यानी खुद को) को बचाया, लेकिन

उसने अभिमानी लोगों (यानी शाऊल) को अपमानित किया। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस बचाव की बात यहाँ दाऊद करता है (श्लोक 5 से 7, 17 से 20) वह शाऊल के हाथों से उसका बचाव है, जिसने कई मौकों पर उसे मारने का प्रयास किया था। हम 2 में कई आख्यानों से गुजरते हैं। शमूएल में जहाँ शाऊल ने दाऊद की जान लेने का प्रयास किया। मुझे लगता है कि यह भी स्पष्ट है कि दाऊद पापहीन पूर्णता का दावा नहीं कर रहा है। न ही वह घमंडी, आत्म-धार्मिकता की घोषणा कर रहा है। बल्कि, वह बस, विनम्रतापूर्वक कह रहा है कि, शाऊल के विपरीत, उसके जीवन के सामान्य पैटर्न ने प्रदर्शित किया कि वाचा के प्रति वफादारी के मार्ग पर चलना उसके दिल की इच्छा थी।

तो फिर प्रभु ने दाऊद को उसके पाप के लिए क्यों माफ कर दिया लेकिन शाऊल को उसके पाप के लिए सिंहासन से हटा दिया? मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि अपनी असफलताओं के बावजूद, दाऊद का दिल प्रभु के प्रति सही था। और जब उसने पाप किया, तो उसने स्पष्ट रूप से पश्चाताप किया और प्रभु से क्षमा मांगी। इसके विपरीत, जब शाऊल ने पाप किया, तो उसने सच्ची विनम्रता और पश्चाताप में प्रभु और शमूएल नबी के सामने झुकने के बजाय, अपने पापपूर्ण व्यवहार को समझाने और उचित ठहराने के तरीके खोजे। मुझे लगता है कि यह देखना उपयोगी है कि दाऊद के भजन का यह महत्वपूर्ण भाग 1 और 2 शमूएल में पहले की बातों से कैसे जुड़ता है। इस बड़े संदर्भ में, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पुस्तक के लेखक ने शाऊल और दाऊद के बीच पाए जाने वाले स्पष्ट अंतर की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए दाऊद के इस गीत को इस विशेष स्थान पर रखा है जिसे अक्सर शमूएल निष्कर्ष (यानी अध्याय 21-24) कहा जाता है। शाऊल से ही प्रभु ने दाऊद को प्राणघातक खतरे से बचाया था। शाऊल ने प्रभु को अस्वीकार कर दिया था, और इस कारण से प्रभु ने उसे अस्वीकार कर दिया था। शाऊल के विपरीत, गंभीर पापों के बावजूद, दाऊद अभी भी वैध रूप से यहोवा के प्रति वफादार रहने का दावा कर सकता था। मुझे लगता है कि पद 21 और 25 में सही काम करने और पद 22 में प्रभु के मार्गों पर चलने आदि के बारे में अपने कथनों से दाऊद का यही मतलब है। सामान्य अर्थ में, यह कहना उचित है कि दाऊद का जीवन वाचा के प्रति वफादारी से चिह्नित था। और यह सबसे महत्वपूर्ण तथ्य उसके

शासन और उसके जीवन के तरीके को स्पष्ट रूप से पहचानने योग्य तरीकों से शाऊल से अलग करता है।

उदाहरण के लिए, जब दाऊद कहता है कि वह परमेश्वर के सामने 'निर्दोष' है (श्लोक 24), तो इसे नैतिक पूर्णता के दावे के रूप में नहीं, बल्कि वाचा के प्रति निष्ठा के दावे के रूप में समझा जाना चाहिए। जब दाऊद श्लोक 24बी में कहता है कि उसने खुद को पाप से दूर रखा है, तो जॉन कैल्विन टिप्पणी करते हैं कि, "वह जिस क्रिया का उपयोग करता है, वह केवल एक पतन को नहीं दर्शाता है, बल्कि एक ऐसा विचलन है जो मनुष्य को परमेश्वर से पूरी तरह से दूर और अलग कर देता है। यह सच है कि दाऊद कभी-कभी शरीर की कमज़ोरी के कारण पाप में गिर गया, लेकिन उसने कभी भी ईश्वरीयता का अनुसरण करने से परहेज़ नहीं किया, न ही उस सेवा को छोड़ा जिससे परमेश्वर ने उसे बुलाया था।"

गर्ट क्वाककेल ने अपने एक खंड में लिखा है, जिसका शीर्षक है *मेरी धार्मिकता के अनुसार: भजन संहिता 7, 17, 18, 26 और 44 में उद्धार के लिए आधार के रूप में ईमानदार व्यवहार* (और मैं कह सकता हूँ कि भजन संहिता 18 मूलतः II शमूएल 22 के समान ही है - ये एक ही भजन के दो अलग-अलग संस्करण हैं) - लेकिन क्वाककेल ने व्यवस्थाविवरण 18:13 में मूसा के एक कथन की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि इस्राएलियों को "अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख निर्दोष बने रहना है," जहाँ हिब्रू पाठ में अभिव्यक्ति 2 शमूएल 22:24 में दाऊद के दावे के समान है जब वह कहता है कि वह अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख निर्दोष था। और क्वाककेल बताते हैं कि, व्यवस्थाविवरण 18:13 के संदर्भ में, उस कथन का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को भविष्यवाणी, जादू-टोना, जादू-टोना और इस तरह के कार्यों में संलग्न नहीं होना चाहिए, बल्कि इसके विपरीत, यह कि व्यक्ति यहोवा के प्रति वफ़ादारी का प्रमाण यह सुनकर देता है कि वह अपने भविष्यवक्ताओं के वचन के माध्यम से भविष्य के बारे में क्या प्रकट करेगा। यदि आपको व्यवस्थाविवरण 18 का वह अंश याद है, तो सवाल यह है कि मूसा के चले जाने के बाद इस्राएल को प्रभु का संदेश कहाँ से मिलेगा? और मूसा कहता है, "तुम इन ज्योतिषियों या भविष्यवक्ताओं के पास जाकर इसे प्राप्त नहीं कर सकते। प्रभु एक भविष्यवक्ता को खड़ा करेगा। वह वही है जिसकी तुम्हें सुननी है और जिसकी

तुम्हें आज्ञा माननी है।" इसलिए, जब मूसा कहता है कि इस्राएलियों को प्रभु के सामने निर्दोष होना चाहिए, तो इसका मतलब यह है कि उन्हें भविष्यवाणियाँ, जादू-टोना और जादू-टोना नहीं करना चाहिए, बल्कि भविष्यवक्ता के वचन को सुनना चाहिए।

आप पाते हैं कि यहाँ दाऊद और शाऊल के बीच के अंतर के लिए इसकी प्रासंगिकता है, क्योंकि शाऊल जादू-टोने में लिप्त था और उसने शमूएल नबी की बातों को नहीं सुना, जबकि पुराने नियम में दाऊद के कभी झूठी पूजा में लिप्त होने का कोई रिकॉर्ड नहीं है और न ही उसके द्वारा प्रभु द्वारा भेजे गए नबियों के निर्देशों और सुधारों के प्रति आज्ञाकारी रूप से प्रतिक्रिया करने के कई उदाहरण हैं। भले ही कोई उचित रूप से सवाल कर सकता है कि 2 शमूएल 22:24 में निर्दोष होने की बारीकियाँ व्यवस्थाविवरण 18:13 में बताई गई बारीकियों के समान हैं, उनके अलग-अलग संदर्भों को देखते हुए, ऐसा लगता है कि काकेल की तरह यह निष्कर्ष निकालना अभी भी वैध होगा कि निर्दोष होना "स्पष्ट रूप से यहोवा की आज्ञाओं को उसके जीवन के लिए निर्णायक निर्देश के रूप में स्वीकार करने से संबंधित था।" यही वह है जो दाऊद, संक्षेप में, उस कथन द्वारा दावा कर रहा है कि वह प्रभु के सामने निर्दोष था। दाऊद वैध रूप से यह दावा कर सकता था। शाऊल नहीं कर सकता था।

शाऊल की अवज्ञा के विपरीत दाऊद की आज्ञाकारिता के संबंध में जो दूसरा मुद्दा उभर कर आता है, वह यह है कि क्या दाऊद की आज्ञाकारिता उसी तरह ईश्वरीय अनुग्रह के योग्य थी जिस तरह शाऊल की अवज्ञा ईश्वर के न्याय के योग्य थी। मुझे लगता है कि यहाँ यह स्पष्ट है कि एक अंतर है। एक अंतर अवश्य किया जाना चाहिए। हालाँकि शाऊल की अवज्ञा निश्चित रूप से उस न्याय के योग्य थी जिसे उसने प्राप्त किया, दाऊद की आज्ञाकारिता परिपूर्णता से बहुत दूर थी, और इसलिए ईश्वर के अनुग्रह के योग्य नहीं थी। लेकिन इस निष्कर्ष का यह अर्थ नहीं है कि दाऊद की आज्ञाकारिता महत्वहीन थी या ईश्वर के छुटकारे के उद्देश्यों की पूर्ति में उसकी भूमिका के संबंध में कोई महत्व नहीं रखती थी। वास्तव में, यह आश्चर्यजनक है कि 1 राजा में ऐसे कथन हैं जो यह सुझाव देते प्रतीत होते हैं कि दाऊद को इस स्थायी राजवंश का वादा उसकी आज्ञाकारिता के कारण ही प्राप्त हुआ। 1 राजा 6:3, "तूने अपने दास मेरे पिता दाऊद पर करुणा की।" क्यों? -

"क्योंकि वह तेरे प्रति ईमानदार, सच्चा और विश्वासयोग्य था।" 1 राजा 15:4 और 5 – "परन्तु दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने यरूशलेम में उसे एक दीपक दिया, कि उसके बाद एक पुत्र उत्पन्न हो, और यरूशलेम को स्थिर करे।" क्यों? "क्योंकि दाऊद ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, और अपने जीवन भर में उसने उसकी किसी भी आज्ञा का पालन नहीं किया, केवल हिती ऊरिय्याह के विषय में।"

ऐसी ही स्थिति परमेश्वर द्वारा अब्राहम के साथ किए गए वादे की वाचा के साथ भी है, जहाँ ऐसे भी पाठ हैं जो अब्राहम की आज्ञाकारिता और प्रभु द्वारा उसे दिए गए वादों के प्रचार के बीच के संबंध का प्रश्न उठाते हैं। उत्पत्ति 22:15 से 18 में, जब अब्राहम ने इसहाक के जीवन को लेने में प्रभु की आज्ञा मानने की अपनी इच्छा दिखाई और प्रभु ने हस्तक्षेप करके एक मेढ़ा प्रदान किया, तब प्रभु का दूत अब्राहम के पास आया और कहा, "प्रभु यों कहता है: क्योंकि तूने मेरी बात मानी है और अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इसलिए मैं अपने नाम की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुझे अवश्य आशीर्वाद दूँगा। मैं तेरे वंश को आकाश के तारों और समुद्र के किनारे की बालू के समान अनगिनत करूँगा। तेरे वंश अपने शत्रुओं के नगरों पर विजय प्राप्त करेंगे।" और यह महत्वपूर्ण वादा: "तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएँगी।" क्यों? - "सब इसलिए कि तूने मेरी बात मानी है।" उत्पत्ति 26:4 और 5 - यह वादा इसहाक से दोहराया गया है और वहाँ हम पढ़ते हैं, "मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के समान असंख्य बना दूँगा। मैं उन्हें ये सभी देश दूँगा और तुम्हारे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएँगी।" मैं ऐसा क्यों करूँगा? - "क्योंकि अब्राहम ने मेरी बात सुनी और मेरी सारी माँगों, आज्ञाओं, विधियों और निर्देशों का पालन किया।" और फिर आप रुक जाते हैं और आश्चर्य करते हैं। अब्राहम से किया गया वह वादा - "तेरे वंश में पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएँगी..." - जिसके बारे में पौलुस कहता है कि यह सुसमाचार है, जो गलातियों में अब्राहम से पहले प्रचारित किया गया था - क्या वह वादा अब्राहम की आज्ञाकारिता पर आधारित है?

हालाँकि इन कथनों के निहितार्थों का गहन विश्लेषण करने के लिए यहाँ पर्याप्त समय नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि सभी बातों पर विचार करने के बाद, यह स्पष्ट लगता है कि मूल बात यह

है: परमेश्वर ने अब्राहम और दाऊद की आज्ञाकारिता को उन वादों के प्रचार में शामिल किया जो उसने उन्हें दिए थे। किसी कुशल कारण या किसी पुण्य पुरस्कार के अर्थ में नहीं - निश्चित रूप से नहीं। लेकिन, वादे के प्रशासन के एक ईश्वरीय रूप से नियुक्त साधन के अर्थ में। यह परमेश्वर ही था जो अब्राहम और दाऊद दोनों में काम कर रहा था ताकि वे अपनी इच्छा पूरी करें और अपनी इच्छा पूरी करें ताकि उनकी आज्ञाकारिता उनके जीवन में सक्रिय परमेश्वर के अनुग्रह का फल हो। आप अब्राहम के बारे में उत्पत्ति 18:18 और 19 में पढ़ते हैं। अब्राहम "निश्चय ही एक बड़ी और सामर्थी जाति बनेगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी।" क्यों? "क्योंकि मैंने उसे चुना है," प्रभु कहते हैं, "कि वह अपने बच्चों और अपने घराने को जो उसके बाद होगा निर्देश देगा कि वे प्रभु के मार्ग पर बने रहें और जो सही और न्यायपूर्ण है वह करते रहें," ताकि, या इसके परिणामस्वरूप, "प्रभु अब्राहम के लिए वह सब पूरा करेगा जो उसने उससे वादा किया था।"

इफिसियों 2:8-10 का यही सिद्धांत है: "क्योंकि तुम अपने आप से नहीं, बल्कि अनुग्रह से विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हो। यह परमेश्वर का दान है, कर्मों के द्वारा नहीं, जैसा कोई घमण्ड करे। हम परमेश्वर की बनाई हुई रचना हैं, और मसीह यीशु में भले काम करने के लिए सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे करने के लिए पहले से तैयार किया है।" इसलिए, अब्राहम और दाऊद की आज्ञाकारिता, वादे के इनाम के योग्य नहीं होने के बावजूद, वादे के प्रशासन के साथ जटिल रूप से जुड़ी हुई थी। और परमेश्वर द्वारा अब्राहम और दाऊद को अपने छुटकारे के उद्देश्यों के साधन के रूप में चुनने से उस प्रतिक्रिया के महत्व को समाप्त करने के अर्थ में उनके विश्वास और आज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया को रोका नहीं गया, बल्कि इसे उनके जीवन में ईश्वरीय अनुग्रह के काम करने के एक अपरिहार्य साथी के रूप में शामिल किया गया। मुझे लगता है कि इसका मतलब है, बेशक, कि, अंततः, यहोवा के साथ दाऊद का अनुग्रह यहोवा द्वारा दाऊद को परमेश्वर के अपने दिल के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में चुने जाने में निहित था (1 शमूएल 13:22)। छुटकारे के इतिहास के सामने आने वाले नाटक में दाऊद के स्थान के स्तर पर, हम पाते हैं कि, जबकि उसने सच्चे वाचा के राजा के आदर्श को उस तरह से मूर्त रूप दिया जैसा न तो शाऊल ने और न ही उसके बाद किसी अन्य इस्राएली राजा ने किया, फिर भी उसका राजत्व एक त्रुटिपूर्ण राजत्व था।

अपने सबसे अच्छे रूप में, यह भविष्य के महान मसीहाई भूमिका के राजत्व का पूर्वानुमान था , जो एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा जिसमें शांति और न्याय पूर्ण और संपूर्ण होगा।

जैसे-जैसे दाऊद की असफलताएँ बढ़ती गईं और पुराने नियम के समय में इस्राएल में सिंहासन पर उसके बाद आने वालों द्वारा उनका विस्तार किया गया, भविष्यवक्ताओं ने उस राजा की ओर इशारा करना शुरू कर दिया जो दाऊद की वंशावली से आएगा जिसे 'धार्मिक शाखा' के रूप में जाना जाएगा (यिर्मयाह 23:5)। यह राजा ऐसा व्यक्ति होगा जो न केवल बुद्धि से शासन करेगा और न्यायपूर्ण और सही काम करेगा (यिर्मयाह 23:5), बल्कि वह एक ऐसा व्यक्ति होगा जो उल्लेखनीय शीर्षक से जाना जाएगा: "प्रभु हमारा धर्म है" (यिर्मयाह 23:6)। यहाँ यिर्मयाह ने जो अनुमान लगाया था, लेकिन पूरी तरह से स्पष्ट नहीं किया, वह यह है कि दाऊद का महान पुत्र कुछ ऐसा करेगा जो किसी भी मानव शासक द्वारा कभी भी पूरा करने की उम्मीद से कहीं बढ़कर होगा। वह एक ऐसा राजा होगा जो न केवल स्वयं पाप रहित होगा, बल्कि दूसरों के पापों का प्रायश्चित्त करके, वह अपनी धार्मिकता को उन लोगों तक बढ़ाएगा जिन पर वह शासन करता है। उसका नाम यीशु होगा क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। वह अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा; उसके राज्य का कभी अंत नहीं होगा। इसलिए, सामान्य तौर पर, यह कहा जा सकता है कि दाऊद ने शासन करने की कोशिश की जैसा कि परमेश्वर ने इस्राएल में सिंहासन पर बैठे व्यक्ति से शासन करने की इच्छा की थी। उसने अपने शासन को व्यवस्था की पुस्तक की आवश्यकताओं के अनुसार ढालने का प्रयास किया; उसने राजा के रूप में अपने पूरे दिल से प्रभु की सेवा की। उसके शासन का सारांश 2 में दिया गया है शमूएल 8:15 में एक राजा के रूप में बताया गया है जिसने "अपने सभी लोगों के लिए न्याय और सही काम किया।" यह श्लोक एक ही वाक्य में दाऊद के शासनकाल के पूरे पाठ्यक्रम को दर्शाता है। इस सामान्यीकृत, फिर भी महत्वपूर्ण कथन में, वर्णनकर्ता दाऊद को एक ऐसे शासक के रूप में दर्शाता है जिसने उन गुणों का प्रदर्शन किया जो प्रभु अपने सभी लोगों से चाहते थे (न्याय और सही काम करना), लेकिन, विशेष रूप से, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसके पास शाही अधिकार वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक गुण थे। न्याय और सही काम करने का मतलब था मूसा की वाचा की आवश्यकताओं का पालन करना।

यदि आप यहजेकेल 18, पद 5 और पद 9 को देखें, तो इसमें लिखा है, "मान लो कि कोई धर्मी मनुष्य हो जो न्याय और धर्म के काम करता हो। वह मेरे नियमों का पालन करता हो और मेरे नियमों का पालन करता हो। वह मनुष्य धर्मी है और वह निश्चय जीवित रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।" भविष्य के महान मसीहाई राजा के बारे में बोलते हुए, यशायाह कहता है, 'दाऊद के घराने के टूठ में से जो अंकुर निकलेगा' (यशायाह 1:11) "वह दरिद्रों का न्याय धर्म से और कंगालों का न्याय धर्म से करेगा। जो न्याय और धर्म के काम हैं, वही करो।" जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, यिर्मयाह कहता है, "दाऊद के सिंहासन पर बैठने वाली धार्मिक शाखा एक ऐसा राजा होगा जो न्याय और धर्म के अनुसार कार्य करेगा। यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं दाऊद के लिए एक धार्मिक शाखा, एक राजा को खड़ा करूँगा जो बुद्धिमानी से शासन करेगा और देश में न्याय और धर्म के अनुसार कार्य करेगा। उसके दिनों में, यहूदा बच जाएगा और इस्राएल सुरक्षित रहेगा। यह वह नाम है जिससे उसे बुलाया जाएगा: यहोवा हमारा धर्म।" वह वास्तव में वही कर रहा है जो न्याय और धर्म के अनुसार है। वही गुण जो परमेश्वर के अपने सभी प्राणियों के शासन की विशेषता रखते हैं और ऐसे कई ग्रंथ हैं जो इस बारे में बात करते हैं। भजन 89:14 और 97:2 में, आपके पास वह कथन है जो परमेश्वर के सिंहासन की नींव के रूप में धार्मिकता और न्याय की बात करता है। इसलिए, इस संक्षिप्त लेकिन व्यापक कथन (2 शमूएल 8:15) में कि दाऊद के शासनकाल की विशेषता उसके द्वारा न्यायपूर्ण और सही काम करने से है, यह हमें बता रहा है कि, उसके जीवन से जुड़ी गिरावटों और असफलताओं के बावजूद, उसके राजत्व ने फिर भी परमेश्वर के अपने शासन के चरित्र का कुछ प्रदर्शन किया। शाऊल के विपरीत, दाऊद वाचा के राजा के आदर्श का सच्चा, यद्यपि अपूर्ण प्रतिनिधि था। एस्केलियन कीज़ ने उल्लेख किया है कि 1 और 2 राजाओं में दाऊद के कई संदर्भ हैं जो उसके धार्मिक व्यवहार की बात करते हैं। अनेक ग्रंथों में कहा गया है कि उसने वही किया जो प्रभु की दृष्टि में सही था, उसने यहोवा के नियमों और आज्ञाओं का पालन किया, वह हृदय से सीधा था, वह धार्मिक था, वह विश्वासयोग्य था, वह यहोवा के प्रति पूरी तरह सच्चा था, उसने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण किया, वह हृदय की खराई से चला, वह यहोवा के मार्गों पर चला - इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ दाऊद के शासनकाल की विशेषता थीं

और दाऊद को एक आदर्श के रूप में स्थापित किया जिसका इस्राएल के अन्य राजाओं को अनुसरण करना था।

तो, यहाँ, फिर, 1 और 2 शमूएल में, हम इस्राएल में राजत्व की स्थापना के बारे में यह कहानी पाते हैं। इस्राएल में राजत्व की स्थापना भविष्य में आने वाली किसी बड़ी चीज़ की ओर इशारा करती है और उसके लिए संगठनात्मक तंत्र प्रदान करती है: मसीहा, सारी पृथ्वी का राजा। इस समय से आगे, पुराने और नए दोनों नियमों में, राजत्व और मसीहाई अपेक्षाएँ यहाँ परमेश्वर के छुटकारे के उद्देश्यों के प्रकट होने में एक केंद्रीय चीज़ बन जाती हैं। यह सब 1 और 2 शमूएल में आकार लेना शुरू होता है। धन्यवाद।”

एमिली विल्सन, जेना मैकफीटर्स , ग्रेस नॉर्थग्रेव्स , शाकिया आर्टसन द्वारा लिखित
 फेथ बार्टल , फेथ गेर्डेस और लिंडसे वैन डोरेन द्वारा संपादित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित